



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 08-08-2025

मथुरा(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-08-08 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2025-08-09	2025-08-10	2025-08-11	2025-08-12	2025-08-13
वर्षा (मिमी)	6.0	25.0	5.0	13.0	3.0
अधिकतम तापमान(से.)	35.0	31.0	34.0	33.0	31.0
न्यूनतम तापमान(से.)	28.0	27.0	27.0	28.0	27.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	90	94	91	89	91
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	62	72	63	67	73
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	7	3	1	6	9
पवन दिशा (डिग्री)	283	36	45	247	265
क्लाउड कवर (ओक्टा)	8	6	7	8	8
चेतावनी	कोई चेतावनी नहीं	भारी वर्षा; आंधी और बिजली, तूफ़ान आदि	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं

पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, आगामी पाँच दिनों में मध्यम से घने बादल छाए रहने के कारण दिनांक 09 से 13 अगस्त, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। अधिकतम तापमान 31.0-35.0°C के मध्य रहेगा, जो सामान्य के आसपास रहने की संभावना है तथा न्यूनतम तापमान 27.0-28.0°C के मध्य रहेगा, जो सामान्य से 1-2°C अधिक रहने की संभावना है। सापेक्षिक आर्द्रता की अधिकतम एवं न्यूनतम सीमा 91-94% तथा 62-73% के मध्य रहेगी। हवा की दिशा दक्षिण-पश्चिम, उत्तर-पूर्व रहेगी तथा हवा की गति 1.0-9.0 किमी प्रति घंटा रहेगी, तथा सामान्य से 2-3 किमी प्रति घंटा अधिक गति से झोंके आने की संभावना है।

मौसम चेतावनियाँ (अगले दिन के 08:30 IST तक मान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 09 से 13 अगस्त, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की चेतावनी है।

मौसम चेतावनियों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एग्रोमेट सलाह:

आगामी सप्ताह में हल्की से मध्यम वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खरीफ की खड़ी फसलों में सिचाई, खरपतवार नाशी, रोगनाशी एवं कीटनाशी के छिड़काव का कार्य स्थगित रखें। खरीफ फसलों की बुवाई का कार्य वर्षा न होने की दशा में उचित नमी पर करें। मक्का, दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दे, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। वर्षा ऋतु में पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें।

सामान्य सलाहकार:

अत्यधिक वर्षा जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। धान के खेतों की मेड़ों को मजबूत बनायें। जिससे बरसात का पानी खेतों में रुका रहे। पशुओं को बरसात के रुके हुए पानी को न पीने दें। बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल हो जाती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय। बरसात के मौसम में रात के समय घर से बाहर निकलने पर टार्च लेकर जाय तथा सर्प, बिच्छू आदि से बचने के लिए घर की दीवारों व छिद्रों को बंद कर दें और हल्का सा कैरोसिन या फिनाइल का छिड़काव कर दें जिसकी गंध से सांप चले जाते हैं।

लघु संदेश सलाहकार:

अत्यधिक वर्षा जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। वर्षा के दौरान पेड़, टेलीफोन व बिजली के खंभों के नीचे कदापि शरण न लें। ऐसी स्थिति में खंभों में करंट उतरने एवं बिजली गिरने की संभावना अधिक रहती है।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
चावल	धान की फसल में चौड़ी एवं संकरी पत्ती के खरपतवार के नियंत्रण के लिए बिसपाइरीबैक सोडियम 10% एस.सी. 0.20 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के 15-20 दिन बाद उचित नमी पर 500 -600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें। धान में खैरा रोग दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु 20-25 किलोग्राम जिंक सल्फेट व 2.5 किलोग्राम चूना 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। धान की रोपाई के 25 से 30 दिन बाद 50 से 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया की टॉपड्रेसिंग करें। ध्यान रहे कि टॉप ड्रेसिंग से पूर्व खरपतवार निकाल दें तथा टॉपड्रेसिंग करते समय खेत में 2 से 3 सेंटीमीटर से अधिक पानी न हो। धान की फसल में जड़ की सुड़ी कीट का प्रकोप दिखाई देने पर कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4% दानेदार रसायन 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से तीन से चार सेंटीमीटर स्थिर पानी में बुरकाव करें।
मक्का	मक्के की फसल में यूरिया की दूसरी टॉपड्रेसिंग नरमंजरी निकलते समय 60 से 70 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से वर्षा न होने की दशा में करें। मक्के की फसल में तना बेधक /प्ररोह मक्खी कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 % एस जी 200 ग्राम /हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम पर करें।
तिल	तिल के फसल में दूसरी निराई-गुड़ाई बुवाई के 35-40 दिन बाद का कार्य वर्षा न होने की दशा में करें। तिल की फसल में पत्ती व फल की सूण्डी कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 % एस जी 200 ग्राम /हेक्टेयर या क्यूनालफास 25% ई सी 1. 25 लीटर/हेक्टेयर की दर से 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम पर करें।
मूँगफली	वर्षा न होने की दशा में मूँगफली के फसलों में बुवाई के 20 से 25 दिन बाद निराई करने के पश्चात 100 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से डालने के बाद हल्की गुड़ाई कर पौधों पर मिट्टी चढ़ाये। मूँगफली की फसल में सफेद गिडार/ दीमक कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु फिप्रोनिल 0.3 % जी.आर. 20 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें।
काला चना	उर्द की फसल में खरपतवार के नियंत्रण हेतु इमैजाथापर १० एस.एल. १.० लीटर /हेक्टेयर की दर से बुवाई के 15-20 दिन बाद 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।
मूँग	मूँग की फसल में खरपतवार के नियंत्रण हेतु इमैजाथापर १० एस.एल. १.० लीटर /हेक्टेयर की दर से बुवाई के १५-२० दिन बाद ५००-६०० लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें। खरीफ

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
	में बोई जाने वाली मूँग की संस्तुति जातियां- नरेन्द्र मूँग -1, पन्त मूँग -1, पन्त मूँग -3, पन्त मूँग -4 , सम्राट, मालवीय जनचेतना, मालवीय जनप्रिया , मालवीय जागृति श्वेता, स्वाति, विराट एवं आई पी एम -2 -14 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए 12 -15 किलोग्राम बीज/हेक्टर की दर से बुवाई का कार्य वर्षा न होने की दशा में शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें।
गन्ना	यदि गन्ने की लंबाई पांच फुट हो गई हो तो ढाई फुट की ऊँचाई पर प्रथम बँधाई करें। प्रथम बँधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बँधाई करें। लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत के घोल से पौधों पर छिड़काव करें। गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	बर्षा की संभावना को देखते हुए सब्जियों की खड़ी फसल में सिचाई/बुवाई का कार्य स्थगित रखें। खरीफ में रोपी जाने वाली सब्जियों जैसे-पत्ता गोभी, गाठ गोभी, ब्रोकली आदि फसलों की नर्सरी डाले, साथ ही अगेती फूलगोभी, बैंगन, मिर्च की तैयार पौध की रोपाई करें। यदि खेत में पानी रुकने की संभावना है तो अगेती फूलगोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्च आदि की रोपाई मेड़ों पर करें। सब्जियों की फसलों में फल छेदक / पत्ती छेदक कीट की रोकथाम हेतु नीम आयल 1.5-2.0 मिली०/लीटर पानी में घोल बनाकर 3 -4 छिड़काव 8 -10 दिन के अन्तराल पर करें। सब्जियों की खड़ी फसलों में निराई - गुड़ाई का कार्य आसमान साफ होने पर करें।
आम	आम, अमरुद, आँवला, नीबू आदि के पहले से भरे गए गड़दों में नए पौधों की रोपाई का कार्य करें। नए बागों में नष्ट हुए पौधों के स्थान पर नए पौधों की रोपाई करें। केले/पपीते के बागों की गुड़ाई-करके तने के चारों तरफ 25-30 सेंटीमीटर ऊंची मिटटी चढ़ा दे स्टैंडिंग करें। आम में पत्ती कटाने वाले कीट की रोकथाम हेतु 2% कार्बरिल 1.5 % धूल का बुरकाव आसमान साफ होने पर करें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भैंस	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जू के संक्रमण की संभावना प्रबल हो जाती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जू के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय। पशुओं को बर्षा के दौरान खुले स्थान/पेड़ के नीचे न बांधें। पशुओं को रात के समय आसमान साफ होने पर ही खुले में बांधें। पशुओं को दिन के समय छायेदार स्थान पर बांधें। पशुओं को खुरपका-मुँहपका रोग की रोकथाम हेतु एफ.एम.डी. वैक्सीन तथा लगड़िया बुखार से बचाव हेतु वी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण कराये। पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में अनाज दें। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी दिन में 3 -4 बार अवश्य पिलायें। गर्भित पशुओं को ढलान वाले स्थान पर न बांधें। पशुओं को पेट में कीड़ों की रोकथाम के लिए कृमिनाशक दवा देने का उचित समय है।

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अंडे के लिए नये चूजें द्वारा मुर्गियों को पालने के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है परंतु ब्रायलर मुर्गियों के लिए यह समय उपयुक्त है। मुर्गियों को भोजन में पूरक आहार, विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री मिलाएं और साथ ही साथ कैल्शियम सामग्री भी मुर्गियों को दें। पानी का क्लोरीनेशन अवश्य करें। मुर्गियों के पेट में कीड़ों के मारने के लिए (डिडिमिंग) की दवा दें। मुर्गीखाने को सूखा रखें तथा बिछावन को पलटते रहें। मुर्गीखाने में अधिक नमी हो तो पंखा चलायें।

मौसम चेतावनियों के संभावित प्रभाव (सामान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 09 से 13 अगस्त, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की चेतावनी है।

प्रभाव आधारित सलाह (सामान्य):

आगामी सप्ताह में हल्की से मध्यम वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खरीफ की खड़ी फसलों में सिचाई, खरपतवार नाशी, रोगनाशी एवं कीटनाशी के छिड़काव का कार्य स्थगित रखें। खरीफ फसलों की बुवाई का कार्य वर्षा न होने की दशा में उचित नमी पर करें। मक्का, दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दे, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। वर्षा ऋतु में पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें।

Farmers are advised to download Unified Mausam and "Meghdoot" android application on mobile for Weather forecast and weather based Agromet Advisories and "Damini" android application for forecast of Thunderstorm and lightening.

Mausam MobileApp link: <https://play.google.com/store/apps/details/>

Meghdoot MobileApp link: <https://play.google.com/store/apps/details>

Damini MobileApp link : <https://play.google.com/store/apps/details>